IAS /PCS प्रारंभिक परीक्षा के किए उपयोगी

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना

सामान्य अध्ययन

जनसंख्या और नगरीकरण

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना प्रकोष्ठ
उत्तर प्रदेश प्रशासन और प्रबंधन अकादमी
सेक्टर-D, अलीगंज, लखनऊ - 226024

यह अध्ययन-सामग्री मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना प्रकोष्ठ (उत्तर प्रदेश प्रशासन और प्रबंधन अकादमी द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना) के अंतर्गत सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कर रहे प्रतियोगियों की सहायता के लिए तैयार कराई गई है।

इस पाठ्य-सामग्री को उत्तर प्रदेश प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी, लखनऊ में 65वें आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु (डिप्टी कलक्टर्स-UPPCS-2018) द्वारा प्रोजेक्ट कार्य के रूप में तैयार किया गया है।

इस सामग्री की पूर्णत: शैक्षणिक और जन कल्याणकारी-उद्देश्यों के लिए तैयार किया है-इसका एक मात्र उद्देश्य प्रदेश के छात्र/छात्राओं का प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मार्गदर्शन व सहयोग करना है।

वैधानिक सूचना - इस अध्ययन सामग्री का किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग प्रतिबंधित है.

INDEX

क्र.स.	अध्याय का नाम	पेज संख्या
1.	भारत की जनगणना	3 – 8
2.	उत्तर प्रदेश की जनगणना के आंकड़े	9 – 17
3.	विश्व की जनसँख्या का विवरण	18 – 21
4.	शहरीकरण	22 – 26
5.	उत्तर प्रदेश में शहरीकरण	27 – 28

भारत की जनगणना

भारत की जनगणना एकमात्र ऐसा जरिया है जिससे भारत के लोगों के बारे में विभिन्न जानकारियां एकत्र की जाती हैं। जनगणना, आर्थिक गतिविधि, साक्षरता और शिक्षा, आवास और घरेलू सुख सुविधाओं, शहरीकरण, जन्म दर और मृत्यु दर, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों, भाषा,धर्म, पलायन, विकलांगता और अनेक अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक और जनगणना संबंधी आंकड़ों के बारे में सांख्यिकीय जानकारी जुटाने का सबसे विश्वसनीय स्त्रोत है। पिछले 130 साल से अधिक समय से चल रही इस कवायद के हर 10 साल में सटीक नतीजे सामने आते हैं। भारत के विभिन्न भागों में 1872 में पहली जनगणना हुई । हाल में देश में 15 वीं राष्ट्रीय जनगणना 2011 संपन्न हुई। आजादी के बाद यह सातवीं जनगणना थी।

भारतीय जनगणना, जनसांख्यिकी (जनसंख्या विशेषताओं), आर्थिक गतिविधि, साक्षरता और शिक्षा, आवास और घरेलू सुविधाओं, शहरीकरण, प्रजनन और मृत्यु दर, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, भाषा, धर्म, प्रवास पर 1872 के बाद से जानकारी का सबसे विश्वसनीय स्रोत रहा है।

भारत की जनगणना: महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत में पहली बार आंशिक जनगणना तात्कालीन गवर्नर लार्ड मेयो के काल में 1872 में हुई थी।
- 1881 में पहली बार लार्ड रिपिन द्वारा नियमित प्राधिकृत रूप से जनगणना करवाई गई।
- भारत के पहले जनगणना आयुक्त हेनरी प्लाउडेन थे।
- भारत में जनगणना का कार्य गृह मंत्रालय के आधीन महापंजीयक या जनगणना आयुक्त के निर्देश अनुसार होता है।
- भारत में 1911 - 1921 के दशक में जन्म वृद्धि दर न्यूनतम रही थी, यह वर्ष 'महविभाजक वर्ष (Great Divide Year) कहलाता है।
- आजाद भारत की पहली जनगणना 1951 में करायी गई थी, इसमें 14 सवाल शामिल थे।

- वर्ष 2001 की जनगणना भारत की पहली पूर्ण कम्प्यूटरीकृत जनगणना थी।
- वर्ष 2011 में करायी गई जनगणना भारत की 15 वी जनगणना है तथा आजादी के बाद की 7 वी जनगणना है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के जनगणना आयुक्त सी चन्द्रमौली थे।
- जनगणना 2011 का प्रथम चरण अप्रैल 2010 से सितंबर 2010 तक चला एवं द्वितीय चरण की अवधि 9 फरवरी से 5 मार्च 2011 थी।
- इस कार्य में 27 लाख कर्मचारियों को लगाया गया था, उनके द्वारा देश के 640 जिलों के 7938 शहरों व41 लाख गांवों में जनगणना का कार्य किया गया।
- भारत में विश्व की 5% जनसंख्या निवास करती है जबकि भारत विश्व के केवल 2.4% भू-भाग पर विस्तृत है।
- भारत की जनसंख्या अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं जापान की कुल जनसंख्या के बराबर है।
- नागालैंड ऐसा एकमात्र राज्य है जहां जनसंख्या में कमी आई है।
- भारत 2050 तक विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जाएगा।
- 2011 की जनगणना में देश की 15 वीं राष्ट्रीय जनगणना है और आजादी के बाद यह सातवीं जनगणना थी। यह केंद्र और राज्य सरकारों के लिए योजना बनाने के लिए बहुमूल्य जानकारी और तैयार करने की नीतियों प्रदान करता है और व्यापक रूप से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों, विद्वानों, व्यापार के लोगों, उद्योगपतियों, और कई और अधिक द्वारा किया जाता है। जनगणना, पिछले एक दशक में देश की प्रगति की समीक्षा सरकार की चल रही योजनाओं की निगरानी, और सबसे महत्वपूर्ण, भविष्य के लिए योजना बनाने के लिए आधार है।
- वर्ष 2011 की जनगणना 31 मार्च, 2011 को केंद्रीय गृह सचिव और भारतीय आर.जी.आई द्वारा जारी की गई थी।
- जनगणना 2011 भारत की 15वीं जनगणना और स्वतंत्रता के बाद 7वीं जनगणना थी।
- रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, जिनके तहत जनगणना 2011 आयोजित की गई थी- सी. चंद्रा मौली

प्रमुख तथ्य

- कुल जनसंख्या- 1,210,569,573 (1.21 बिलियन)
- 2001-2011 के दौरान जनसंख्या में वृद्धि 181 मिलियन है।
- जनगणना 2011 दो चरणों में आयोजित की गई थी - हाउसलिस्टिंग और हाउसिंग जनगणना (अप्रैल से सितम्बर, 2010). जनसंख्या गणना (9 से 28 फरवरी, 2011)
- जनगणना 2011 में प्रशासनिक इकाइयों की संख्या - राज्य / संघ शासित प्रदेश 35, जिले 640, उप-जिले 5,924, कस्बे 7,936, गांव41 लाख
- महाराष्ट्र का ठाणे जिला भारत का सबसे अधिक आबादी वाला जिला है।
- अरुणाचल प्रदेश की दीबांग घाटी निम्नतम आबादी वाला जिला है।
- पुडुचेरी के माहे जिले में सबसे ज्यादा लिंग अनुपात 1176 महिलायें प्रति 1000 पुरुष है।
- दमन जिले में सबसे कम लिंग अनुपात 533 महिलायें प्रति 1000 पुरुष है।
- 37,346 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के आंकड़े के साथ उत्तर-पूर्वी दिल्ली सबसे ज्यादा घनत्व वाला है।
- भारत की कुल जनसंख्या - 121.5 करोड़
- विश्व की कुल जनसंख्या में भारत का प्रतिशत - 17.5 %
- दशकीय जन्म वृद्धि दर - 18.14 करोड़ (17.7%)
- भारत में पुरुषों की जनसंख्या - 62.31 करोड़
- महिलाओं की जनसंख्या - 58.47 करोड़
- सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य - उत्तर प्रदेश - 19.98 करोड़, महाराष्ट्र - 11.23 करोड़, बिहार - 10.40 करोड़, प.बंगाल, आन्ध्र प्रदेश
- न्यूनतम जनसंख्या वाले राज्य - सिक्किम
- 37346 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के आंकड़े के साथ उत्तर-पूर्वी दिल्ली सबसे ज्यादा
- भारत का क्षेत्रफल पूरी दुनिया के क्षेत्रफल का4 फीसदी है लेकिन विश्व की कुल आबादी की तुलना में 17.5 फीसदी लोग भारत में रहते हैं. पिछली जनगणना में ये आंकड़ा 16.8 प्रतिशत था।
- भारत की मौजूदा आबादी 1 अरब 21 करोड़ है।

- जनसंख्या के आधार पर उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है जहां देश की कुल जनसंख्या के 16 प्रतिशत लोग रहते हैं।
- देश का कुल लिंगानुपात 1971 से अबतक के सबसे ऊंचे स्तर 940 पर पहुंच गया है। ये साल 2001 से 7 प्वाइंट का इज़ाफा है।
- बच्चों का लिंगानुपात घटा है, ये स्वतंत्र भारत के सबसे निचले स्तर पर है।
- पंजाब और हरियाणा में पिछले दशक में लिंगानुपात बढ़ा है लेकिन ये अब भी पूरे देश में सबसे कम है।
- भारत में साक्षरता की दर 10 प्रतिशत बढ़कर करीब 74 प्रतिशत हो गई है।
- पिछले दस सालों में पुरुषों के मुकाबले करीब 24 लाख महिलाएं ज़्यादा साक्षर हुई हैं।
- बिहार और अरुणाचल प्रदेश में राज्यों में सबसे कम साक्षरता है।
- कुल आबादी के मुताबिक उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है।
- राजधानी दिल्ली में प्रति वर्ग किलोमीटर सबसे ज़्यादा, 11 हज़ार लोग रहते हैं।

भारत की जनगणना 2011 : जनसंख्या घनत्व

- भारत का जनसंख्या घनत्व - 382/ व्यक्ति वर्ग किमी
- सर्वाधिक घनत्व वाले राज्य - बिहार - 1106 / वर्ग किमी, प. बंगाल - 1028/ वर्ग किमी, केरल - 860/ वर्ग किमी
- न्यूनतम घनत्व वाले राज्य - अरुणाचल प्रदेश - 17/ व्यक्ति वर्ग किमी

भारत की जनगणना 2011 : लिंगानुपात

- भारत में लिंगानुपात - 940 महिला / 1000 पुरुष
- सर्वाधिक लिंगानुपात वाले राज्य - केरल - 1084, तमिलनाडु - 996, आन्ध्र प्रदेश - 993, मणिपुर - 992, छत्तीसगढ़ - 991
- न्यूनतम लिंगानुपात वाले राज्य - हरियाणा - 878

भारत की जनगणना 2011 : साक्षरता

- भारत की साक्षरता दर - 74.04 %
- पुरुष साक्षरता दर - 82.14 %
- महिला साक्षरता दर - 65.46 %

- सर्वाधिक साक्षरता दर वाले राज्य - केरल - 93.9%, मिजोरम - 91.6 %
- सर्वाधिक पुरष साक्षरता दर वाले राज्य - लक्क्षद्विप, केरल - 96.0 %, मिजोरम - 93.7%
- सर्वाधिक महिला साक्षरता दर वाले राज्य - केरल, मिजोरम - 89.4 %
- न्यूनतम साक्षरता दर वाले राज्य - बिहार- 63.8%, अरुणाचल प्रदेश -67%. राजस्थान - 67.1%, झारखंड
- न्यूनतम पुरुष साक्षरता दर वाले राज्य - बिहार - 73.4%, अरुणाचल प्रदेश - 73.7%, आंध्रप्रदेश - 75.6%
- न्यूनतम महिला साक्षरता दर वाले राज्य - राजस्थान - 52.7%, बिहार - 53.3%, झारखंड - 56.2%

भारत की जनगणना 2011 : केंद्र शासित पदेश

- सर्वाधिक जनसँख्या वाला केंद्रशासित राज्य - दिल्ली - 1.67 करोड़
- न्यूनतम जनसँख्या वाला केंद्रशासित राज्य - लक्क्षद्विप - 47 हजार
- न्यूनतम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य - अण्डमान - 46/ वर्ग किमी
- सर्वाधिक साक्षरता वाला केंद शासित राज्य - लक्क्षद्विप - 92.28 %
- न्यूनतम साक्षरता वाला केंद्रशासित राज्य - दादर एवं नागर हवेली - 77.65

अन्य आंकडें -

- वर्ष 2010 और 2019 के बीच भारत की जनसंख्या में 1.2% प्रति वर्ष की वृद्धि हुई है, जबकि इसी अवधि में वैश्विक वृद्धि का औसत 1.1% प्रति वर्ष रहा है।
- देश के 24 राज्यों में रहने वाली भारत की लगभग आधी आबादी में प्रति महिला 2.1 बच्चों की प्रतिस्थापन प्रजनन दर है, जनसंख्या वृद्धि पर रोकथाम लगाने पर वांछित परिवार का आकार यह होगा।
- वर्ष 2019 तक, भारत की जनसंख्या 1.36 बिलियन तक होने की संभावना है जो वर्ष 1994 में 942.2 मिलियन तथा वर्ष 1969 में 541.5 मिलियन थी।
- भारत की 27% जनसंख्या 0-14 वर्ष और 10-24 वर्ष की आयु वर्ग में, जबकि देश की 67% जनसंख्या 15-64 आयु वर्ग में दर्ज की गई। देश की 6% जनसंख्या 65 वर्ष और उससे अधिक आयु की है।

- भारत ने जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में सुधार दर्ज किया है। वर्ष 1969 में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 47 वर्ष थी, जो वर्ष 1994 में 60 वर्ष और वर्ष 2019 में बढ़कर 69 वर्ष हो गई है।

उत्तर प्रदेश की जनगणना के आंकड़े

उत्तर प्रदेश की प्रशासकीय संरचना

कुल जिले 75

कुल मंडल 18

नगरों एवं नगर समूह की संख्या 915

आर्थिक संभाग क्षेत्र 4

कुल तहसील 350

सामुदायिक विकास खंड 820

नगर निगम 17

न्याय पंचायत 8135

नगर पालिका 226

ग्राम पंचायत 59163

विकासखंड 822

आबाद ग्राम 97941

नगर पंचायत 457

कुल गांव 106774

राज्य स्तर पर जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़े

नगर निगम की आबादी के अनुसार बड़े नगर 10 लाख से अधिक जनसंख्या

1. लखनऊ
2. कानपुर नगर
3. गाजियाबाद
4. आगरा
5. मेरठ

6. वाराणसी

7. प्रयागराज

10 लाख से अधिक आबादी की जनसंख्या वाले कुल जिले 12

शीर्षक	भारत का आंकड़ा	उत्तर प्रदेश का आंकड़ा	देश में उत्तर प्रदेश का स्थान
कुल क्षेत्रफल	328 7263	240928	4
कुल जनसंख्या	1210854977	199812341	1
पुरुष जनसंख्या %	51.47 %	52.28%	1
महिला जनसंख्या %	48.53 %	47.72 %	1
दशकीय वृद्धि %	17.7 %	20.2 %	14
लिंगानुपात	943	912	26
0-6 आयु वर्ग में लिंगानुपात	919	902	26
साक्षरता दर	73.0 %	67.7 %	29
पुरुष साक्षरता दर साक्षरता	80.9 %	77.3 %	29
महिला साक्षरता दर	64.6 %	57.3 %	31
नगरीकृत जनसंख्या	31.2 %	22.3 %	30
ग्रामीण जनसंख्या %	68.84 %	77.7 %	5
ग्रामीण साक्षरता दर %	67.77 %	65.46 %	2
अनुसूचित जाति %(SC)	16.6 %	20.7 %	3

अनुसूचित जन जनजाति % (ST)	8.6 %	0.6 %	30
नगरीय जनसंख्या	37.71 करोड़ (31.31 %)	4.44 करोड़ (22.3 %)	2
ग्रामीण जनसंख्या	83.37 करोड़ (68.9 %)	15.53 करोड़ (77.7 %)	1
जन्म दर	21. 4	27. 2%	2
शिशु मृत्यु दर	40	50	4
प्राकृतिक सवृद्धि दर	14.4 %	19.5 %	2
0-6 आयुवर्ग की जनसंख्या	13.6 %	15.4 %	1

विवरण	2001	2011	अंतर
जनसंख्या	166197921	199812341	
पुरुष जनसंख्या	87565369	104480510	
महिला जनसंख्या	78632552	95331831	
जनसंख्या वृद्धि दर	25.80 %	20.23 %	-5.57 %
देश की कुल जनसंख्या का प्रतिशत	16.16 %	16.50 %	+0.34
लिंग अनुपात	898	912	+14

बाल लिंग अनुपात	916	902	-14
घनत्व/किमी.2	690	829	+ 139
क्षेत्र(किमी.2)	240928	240928	
कुल बच्चों की जनसंख्या (0-6 वर्ष)	31624628	30791331	
बच्चों की जनसंख्या (0-6 वर्ष)	16509033	16185581	
बच्चियों की जनसंख्या (0-6 वर्ष)	15115595	14605750	
पूरे प्रदेश की साक्षरता	56.27 %	67.68 %	+11.41
पुरुष साक्षरता	68.82 %	77.28 %	+8.46
महिला साक्षरता	42.22 %	57.18 %	+14.96
कुल साक्षर (संख्या)	75719284	114397555	
पुरुष साक्षर (संख्या)	48901413	68234964	
महिला साक्षर (संख्या)	26817871	46162591	

सर्वाधिक जनसंख्या

1. इलाहाबाद
2. मुरादाबाद
3. गाजियाबाद

न्यूनतम जनसंख्या

1. महोबा
2. चित्रकूट
3. हमीरपुर

सर्वाधिक पुरुष जनसंख्या

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. गाजियाबाद

सर्वाधिक महिला जनसंख्या

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. जौनपुर

सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. जौनपुर

न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या

1. गौतम बुध नगर
2. महोबा
3. हमीरपुर

सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या

1. गाजियाबाद
2. लखनऊ
3. कानपुर

न्यूनतम नगरीय जनसंख्या

1. श्रावस्ती
2. चित्रकूट
3. कौशांबी

सर्वाधिक दशकीय वृद्धि

1. गौतम बुध नगर
2. गाजियाबाद
3. श्रावस्ती

न्यूनतम दशकीय वृद्धि

1. कानपुर
2. हमीरपुर
3. बागपत

सर्वाधिक जनघनत्व

1. गाजियाबाद
2. वाराणसी
3. लखनऊ

न्यूनतम जनघनत्व

1. ललितपुर
2. सोनभद्र
3. हमीरपुर

सर्वाधिक साक्षरता दर

1. गौतम बुध नगर
2. बुध नगर कानपुर
3. औरैया

न्यूनतम साक्षरता दर

1. श्रावस्ती
2. बहराइच
3. बलरामपुर

सर्वाधिक पुरुष साक्षरता दर

1. गौतम बुध नगर
2. औरैया
3. गाजियाबाद

न्यूनतम पुरुष साक्षरता

1. श्रावस्ती
2. बहराइच
3. बलरामपुर

सर्वाधिक महिला साक्षरता दर

1. कानपुर नगर
2. लखनऊ
3. गौतम बुद्ध

न्यूनतम महिला साक्षरता

1. श्रावस्ती
2. बलरामपुर
3. बहराइच

सर्वाधिक लिंगानुपात

1. जौनपुर (1024)
2. आजमगढ़
3. देवरिया

न्यूनतम लिंगानुपात

1. गौतम बुध नगर (851)
2. बागपत
3. हमीरपुर

उत्तर प्रदेश धर्म आधारित जनसंख्या 2011

हिंदू	79.73
मुस्लिम	19.26
सिक्ख	0.32
ईसाई	0.18
जैन	0.11
बौद्ध	0.10
अन्य	0.01 + 0.24

धर्म आधारित जनगणना महत्वपूर्ण तथ्य

1. सर्वाधिक जनसंख्या हिंदू धर्म को तथा सबसे कम जनसंख्या बौद्ध धर्म को मानने वालों की है।
2. धार्मिक जनसंख्या घटते क्रम में- हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध
3. सर्वाधिक साक्षरता दर जैन धर्म (93.2%) की तथा सबसे कम मुस्लिम धर्म (47.8%) की है।
4. सर्वाधिक लिंगानुपात ईसाई धर्म में (961) तथा सबसे कम सिख धर्म (877) में है।

विश्व की जनसँख्या का विवरण

विश्व में जनसंख्या वितरण के प्रारूप

जनसंख्या के वितरण और घनत्व के प्रारूप से हमें किसी क्षेत्र की जान जनांकिकीय विशेषताओं को समझने में मदद करते हैं। जनसंख्या वितरण शब्द का अर्थ भू पृष्ठ पर लोग किस प्रकार वितरित हैं इस बात से लगाया जाता है। मोटे तौर पर विश्व की जनसंख्या का 90% इसके 10% भाग में निवास करता है। विश्व के 10 सर्वाधिक आबाद देशों में विश्व की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है इन देशों में 6 एशिया में अवस्थित है।

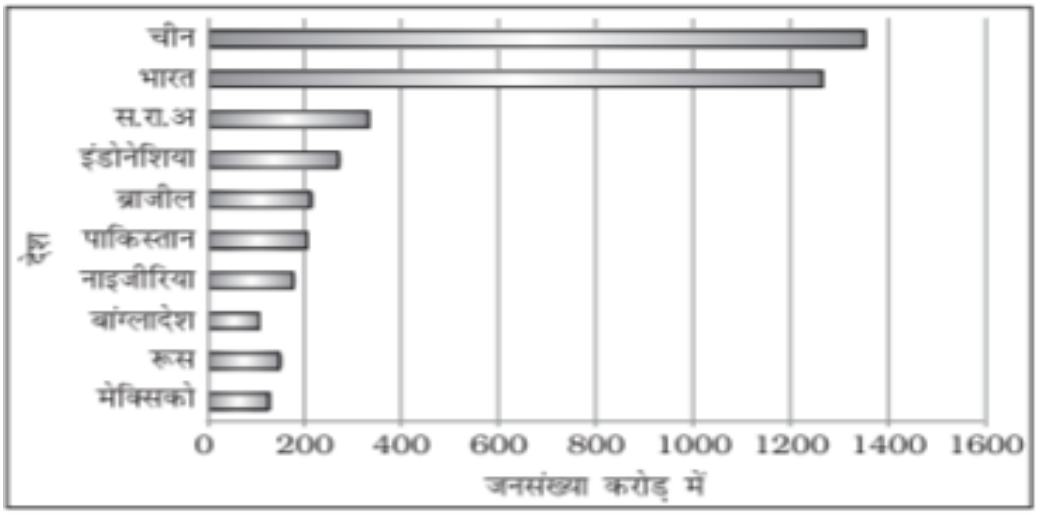

चित्र 2.1 : अत्याधिक सघन जनसंख्या वाले देश

जनसंख्या परिवर्तन के स्थानिक प्रारूप

विश्व के विभिन्न भागों में जनसंख्या वृद्धि की तुलना की जा सकती है। विकसित देशों में विकासशील देशों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि कम है। जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास में ऋणात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

यद्यपि जनसंख्या परिवर्तन की वार्षिक दर 1 पॉइंट 4 प्रतिशत निम्न प्रतीत होती है वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण है :

1. जब एक निम्न वार्षिक दर अत्यंत बड़ी जनसंख्या पर लागू होती है तो इससे जनसंख्या में विशाल परिवर्तन होगा।
2. यद्यपि वृद्धि दर निरंतर घटती रहे तो भी कुल जनसंख्या प्रतिवर्ष बढ़ती है प्रसव के दौरान, मृत्यु दर की भाती, शिशु मृत्यु दर में भी वृद्धि हो सकती है।

तालिका 2.3 : जनसंख्या वृद्धि (2010–15)

प्रदेश	वृद्धि दर	
	1990–95	2010–15 (अनुमानित)
विश्व	1.6	1.2
अफ्रीका	2.4	2.6
यूरोप	0.2	0.1
उत्तर अमेरिका	1.4	0.8
लैटिन अमेरिका, कैरेबियन	1.7	1.1
एशिया	1.6	1.0
ओशनिया (आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फिजी)	1.5	1.5

स्रोत: डेमोग्राफिक ईयर बुक, 2015

अभ्युदय

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृतियां

पृथ्वी पर जनसंख्या 700 करोड़ से भी अधिक है। इस आकार तक पहुंचने में जनसंख्या को शताब्दीया लगी है। आरंभिक काल में विश्व की जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ी। विगत कुछ वर्षों के दौरान ही जनसंख्या आश्चर्यजनक दर से बढ़ी है। लगभग 8000 से 12000 वर्ष पूर्व कृषि के उद्भव आरंभ के पश्चात जनसंख्या का आकार बहुत छोटा था मोटे तौर पर 80 लाख। ईशा की पहली शताब्दी में जनसंख्या 30 करोड़ से कम थी। 16वीं और 17वीं शताब्दी में पढ़ती विश्व व्यापार में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के लिए मंच तैयार किया। 1750 ईसवी के आसपास जब औद्योगिक क्रांति का उदय हुआ, विश्व की जनसंख्या 55 करोड़ थी। 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के पश्चात विश्व जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि हुई अब तक प्राप्त प्रौद्योगिकी प्रगति जन्म दर को घटाने में सहायता की तथा त्वरित जनसंख्या वृद्धि के लिए मंच प्रदान किया।

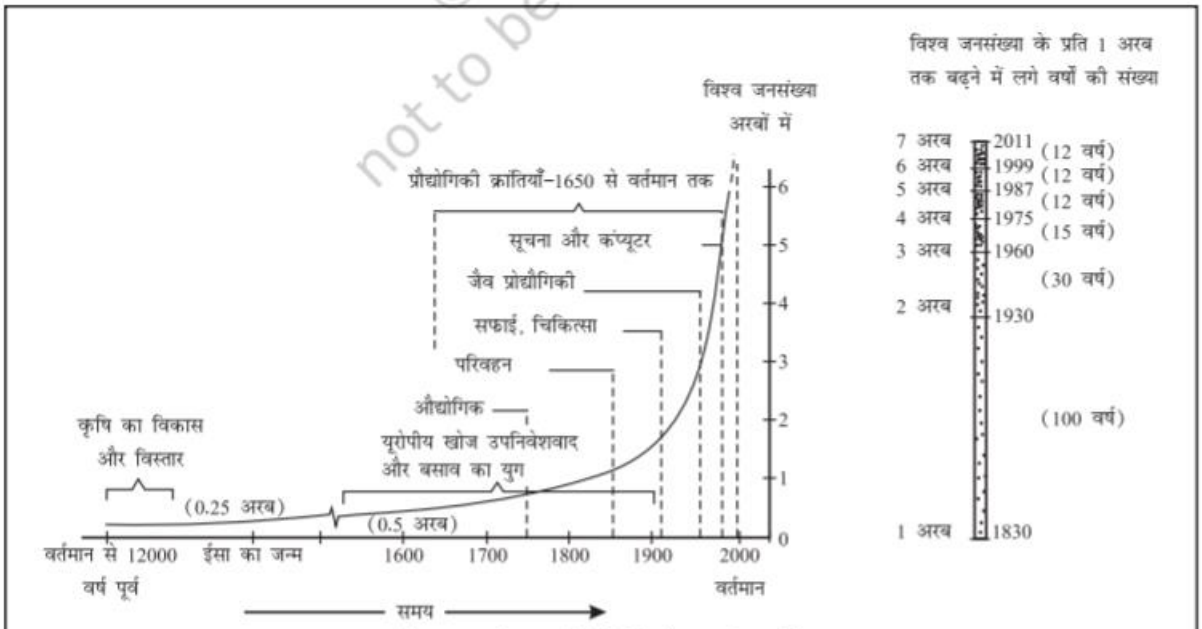

चित्र 2.2: संसाधन, प्रौद्योगिकी और जनसंख्या वृद्धि

काल	जनसंख्या	अवधि जिसमें जनसंख्या दो गुना हुई
10,000 ई॰ पू॰	50 लाख	
1650 ई॰	50 करोड़	1500 वर्ष
1804 ई॰	100 करोड़	154 वर्ष
1927 ई॰	200 करोड़	123 वर्ष
1974 ई॰	400 करोड़	47 वर्ष
2025 ई॰	800 करोड़ प्रक्षेपित संख्या	51 वर्ष

स्रोत: डेमोग्राफ़िक ईयर बुक, 2009-10

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (United Nations Population Fund-UNFPA) द्वारा जारी स्टेट ऑफ़ वर्ल्ड पॉपुलेशन-2019 रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2010 और 2019 के बीच भारत की आबादी औसतन 1.2 प्रतिशत बढ़ी है, जो चीन की वार्षिक वृद्धि दर के दोगुने से अधिक है।

- यह रिपोर्ट प्रजनन क्षमता के स्तर को कम करने में देशों की सहायता करने हेतु स्थापित UNFPA की 50वीं वर्षगाँठ को भी इंगित करती है।
- यह रिपोर्ट वर्ष 1994 में हुए जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICPD) के 25 वर्षों को भी चिह्नित करती है, जहाँ 179 देशों की सरकारों ने जनसंख्या वृद्धि को संबोधित करने हेतु यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के अधिकार-आधारित दृष्टिकोण पर सहमत व्यक्त की थी।

- यौन और प्रजनन स्वास्थ्य में लैंगिकता (यौनिकता) से संबंधित केवल रोग, प्रक्रिया का सुचारू रूप से कार्य न करना या दुर्बलता (विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार) का अभाव ही शामिल नहीं है, अपितु इसमें शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को भी शामिल किया जाता हैं।

प्रमुख बिंदु

- वैश्विक जनसंख्या 72 वर्ष की औसत जीवन प्रत्याशा के साथ वर्ष 2018 के 7.633 बिलियन से बढ़कर वर्ष 2019 में 7.715 बिलियन हो गई।
- सबसे कम विकसित देशों में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई, अफ्रीकी देशों में एक वर्ष में औसतन 2.7% वृद्धि दर्ज की गई।
- वर्ष 2050 तक वैश्विक आबादी में होने वाली समग्र वृद्धि में सर्वाधिक भागीदारी उच्च प्रजननशीलता वाले अफ्रीकी देशों में अथवा बड़ी आबादी वाले देशों जैसे- नाइज़ीरिया एवं भारत में होने का अनुमान है।

शहरीकरण

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में दुनिया की आधी आबादी शहरों में रह रही है। वर्ष 2050 तक भारत की आधी आबादी महानगरों व शहरों में निवास करने लगेगी। एक दूसरी संस्था ऑक्सफोर्ड इकॉनोमिक के अध्ययन के मुताबिक वर्ष 2019 से लेकर वर्ष 2035 के बीच सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले सभी शीर्ष दस शहर भारत के ही होंगे। विश्व बैंक की वर्ष 2015 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत का शहरीकरण 'Hidden And Messy' अर्थात अघोषित एवं अस्त-व्यस्त है। भारत का शहरी विस्तार देश की कुल आबादी का 55.3% है परंतु आधिकारिक जनगणना के आँकड़े इसका विस्तार केवल 31.2% ही बताते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत में 53 ऐसे शहर हैं जिनकी आबादी 10 लाख से अधिक है। इसके अलावा देश की राजधानी दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलूरू और हैदराबाद जैसे महानगर हैं जिनकी आबादी लगातार बढ़ रही है। लोग बेहतर भविष्य की तलाश में यहाँ पहुँचते और बसते रहते हैं।

क्या है शहरीकरण?

- शहरी क्षेत्रों के भौतिक विस्तार मसलन क्षेत्रफल, जनसंख्या जैसे कारकों का विस्तार शहरीकरण कहलाता है। शहरीकरण भारत समेत पूरी दुनिया में होने वाला एक वैश्विक परिवर्तन है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मुताबिक़ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का शहरों में जाकर रहना और वहाँ काम करना भी 'शहरीकरण' है।
- 'नवीन भारत (New India)' पहल को आगे बढ़ाने की दिशा में शहरी बुनियादी ढाँचों में सुधार के लिये शहरीकरण के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाने की प्रक्रिया अपनाई जा रही है।

बढ़ते शहरीकरण का कारण

- शहरीकरण के बढ़ने का एक प्रमुख कारण बेरोज़गारी है। शहरों में आने वाले लोगों में अधिक संख्या नौकरी की तलाश करने वालों की है, न कि बेहतर नौकरी पाने वालों की तथा बाहर से आने वालों में बेरोज़गारी की दर अपेक्षाकृत कम है।
- गाँव से शहरों की ओर पलायन का मुख्य कारण वेतन-दर तो है ही इसके अलावा दो अन्य प्रमुख कारण है- जोत की कम भूमि और परिवार का बड़ा आकार, शहरी प्रवासन के लिये जाति-प्रथा भी एक महत्त्वपूर्ण कारक है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों में तीव्र गति से सरकारी सेवाओं में विस्तार हुआ, जो गाँव से शहरों की ओर प्रवासन में एक प्रमुख उत्प्रेरक बना।
- औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरुप शहरी क्षेत्रों में भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई।
- शहरी क्षेत्रों में बेहतर बुनियादी सुविधाएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन की सुगम व्यवस्था आदि।
- कृषि में होने वाले नुकसान की वज़ह से लोग कृषि छोड़कर रोज़गार की तलाश में शहर आते हैं। कृषि मंत्रालय के मुताबिक़ खेती पर निर्भर लोगों में से 40 फीसदी लोग ऐसे हैं जिनको अगर विकल्प मिले तो वे तुरंत खेती छोड़ देंगे। क्योंकि खेती करने में धन की लागत बढ़ती जा रही है।

भारत में शहरी क्षेत्र के मानक

- भारतीय समाज में किसी क्षेत्र को शहरी क्षेत्र माने जाने के लिये आवश्यक है कि किसी मानव बस्ती की आबादी में 5000 या इससे अधिक व्यक्ति निवास करते हों।
- इस मानव आबादी में कम से कम 75% लोग गैर-कृषि व्यवसाय में संलग्न हों।
- जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से कम नहीं होना चाहिये।
- इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएँ मसलन उद्योग, बड़ी आवासी बस्तियाँ, बिजली और सार्वजनिक परिवहन जैसी व्यवस्था हो तो इसे शहर की परिभाषा के अंतर्गत माना जाता है।

भारत में शहरीकरण से संबंधित आँकड़े

- आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2001 तक भारत की आबादी का 27.81% हिस्सा शहरों में रहता था। वर्ष 2011 तक यह 31.16% और वर्ष 2018 में यह आँकड़ा बढ़कर 33.6% हो गया।

- वर्ष 2001 की जनगणना में शहर-कस्बों की कुल संख्या 5161 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 7936 हो गई।
- भारत की शहरी आबादी का लगभग 17.4% झुग्गी-झोपड़ी में रहता है।
- संयुक्त राष्ट्र की एक नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में विश्व की आधी आबादी शहरों में रहने लगी है और वर्ष 2050 तक भारत की आधी आबादी महानगरों और शहरों में रहने लगेगी।
- भारत में शहरीकरण तेज़ी से बढ़ रहा है और वैश्विक स्तर पर भी तब तक कुल आबादी का 70% हिस्सा शहरों में निवास करने लगेगा।
- इसी प्रकार वर्ष 1991 में देश में कुल 4689 कस्बे थे जो वर्ष 2001 में बढ़कर 5161 और वर्ष 2011 में 7935 हो गई।
- विश्व बैंक (World Bank), द्वारा वर्ष 2015 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में शहरी आबादी का अनुपात 31% न होकर लगभग 55.3% है।

शहरीकरण से संबंधित समस्याएँ

भारत के अधिकांश शहर अतिशहरीकरण के शिकार हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जब शहरी आबादी इतना बढ़ जाए की शहर अपने निवासियों को अच्छा जीवनशैली देने में असफल हो जाए तो वह स्थिति अतिशहरीकरण कहलाती हैं। शहरी जनसंख्या में हो रही वृद्धि ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है जिसमें आवास की समस्या प्रमुख है। यह समस्या आवास की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में देखने को मिलती है।

- सामाजिक सुरक्षा का अभाव- ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में आने वाले लोग अधिकतर गरीब होते हैं, उनके पास किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है।
- पारिवारिक विघटन- शहरीकरण के परिणामस्वरूप बड़े परिवार छोटे परिवारों में विभक्त हो गए हैं। इसके अतिरिक्त परिवारों में विवाह-विच्छेद, विधवाओं का शोषण, वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं में वृद्धि हुई है।
- निर्धनता- ग्रामीण भारत गरीबी को छिपाने और उससे निपटने में ज़्यादा सक्षम है। जबकि शहरी भारत में ऐसा संभव नहीं हैं। शहरी गरीबी बढ़ती जा रही है, क्योंकि लोग रोज़गार की तलाश में अपना गाँव छोड़ रहे हैं।
- पर्यावरण समस्या- शहरी केंद्रों में जनसंख्या के लगातार बढ़ते रहने एवं औद्योगीकरण के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण तथा अवनयन की कई समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। महानगरों

और शहरों में प्रदुषण का मुख्य कारण वाहनों एवं औद्योगिक संस्थानों द्वारा निकला विषैला रसायन है।

- आर्थिक असमानता- भारतीय शहरों में आर्थिक असमानता विकसित देशों की तुलना में अधिक है। महानगरों पर खर्च की गई आय ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है। इस आर्थिक अंतर के परिणामस्वरूप ग्रामीण शहरों की ओर आकर्षित होते हैं।
- जनांकिकीय असंतुलन की समस्या- भारत में पश्चिमी देशों की तुलना में शहर प्रवास की प्रवृत्ति पुरुषों में ज़्यादा है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादक पुरुष जनसंख्या में कमी आ रही है।
- शहरी क्षेत्रों में बाढ़ की समस्या से जुड़े मुद्दे उठाते समय अधिकांश नागरिक प्रदर्शन, राजनीतिक या मीडिया प्रयास सरकार की निष्क्रियता, सार्वजनिक बनाम निजी संपत्ति आदि मुद्दों तक ही सीमित रह जाते हैं। ऐसे अधिकांश मामलों में भूमि उपयोग में बदलाव, प्राकृतिक संरक्षण, या स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र के प्रबंधन में स्थानीय समुदायों (किसान, मछुआरे आदि) की भूमिका को अनदेखा कर दिया जाता है।

सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास

- सरकार द्वारा शहरों के ठीक प्रकार से नियोजन के लिये स्मार्ट सिटी मिशन की अवधारणा को अपनाया गया है।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत अभिनव एवं आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकी के उपयोग की सुविधा प्रदान करने के लिये प्रौद्योगिकी सब-मिशन भी शुरू किया गया है।
- जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत शहरों का कायाकल्प करने का प्रयास किया जा रहा है।
- कायाकल्प और शहरी रूपान्तरण के लिये अटल मिशन यानी अमृत योजना के अंतर्गत शहरों की अवसंरचना को मज़बूत किया जा रहा है।

शहरीकरण का प्रभाव

शहरीकरण की प्रक्रिया के चलते आज संयुक्त परिवार एकाकी परिवार में बदल रहे हैं। परिवार का आकार सिकुड़ रहा है तथा नातेदारी संबंध कमज़ोर हुए हैं।

- शहरीकरण ने जाति व्यवस्था पर भी प्रभाव डाला है। वर्तमान में जातीयता के प्रति कटुता में कमी आई है।

- शहरीकरण ने धार्मिक क्षेत्र पर भी प्रहार किया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि शहरों में लोगों की धर्म से आस्था होती है लेकिन वे धर्म के नाम पर आडंबर पर विश्वास नहीं करते हैं।
- शहरीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों में व्यापक बदलाव किया है। महिलाओं की परिस्थिति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक ऊँची है।

शहरीकरण का महत्व

- विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक़, दुनिया की 54% से अधिक आबादी अब शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। ये आबादी वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 80% का योगदान करती है और दो-तिहाई वैश्विक ऊर्जा का उपभोग करती है, साथ ही 70% ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के लिये भी जिम्मेदार है।
- शहरीकरण के कारण आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।
- शहरीकरण और शिक्षा के विकास के कारण जाति-प्रथा जैसी व्यवस्थाएँ अब ध्वस्त हो रही हैं।
- प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी के चलते लोगों रहन-सहन का स्तर बेहतर होता है
- उत्पादकता को बढ़ाता है और विशेष रूप से मैन्युफैक्चरिंग और सेवाओं में रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करता है।

उत्तर प्रदेश में शहरीकरण

जनगणना, 2011 के अनुसार, 19.96 करोड़ की कुल आबादी के साथ उत्तर प्रदेश भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, जिसमें से 15.51 करोड़ ग्रामीण इलाकों में और 4.45 करोड़ शहरी इलाकों में रहते हैं। 2001-2011 के बीच शहरी क्षेत्रों में लगभग 1.09 करोड़ लोगों का शुद्ध जुड़ाव हुआ है। इस प्रकार, कुल जनसंख्या का लगभग 16.50% और भारत की शहरी आबादी का 11.80% उत्तर प्रदेश में निवास करता है।

राज्य की कुल जनसंख्या में शहरी आबादी का प्रतिशत 2011 की जनगणना के अनुसार 22.28 है, जबकि यह प्रतिशत 2001 में 20.78 था। इस प्रकार, 2001-2011 के दौरान शहरी आबादी में 1.50 प्रतिशत अंकों की वृद्धि दर्ज की गई है। हालाँकि, 31.16% के अखिल भारतीय आंकड़ों की तुलना में राज्य में शहरीकरण (22.28%) का स्तर काफी कम है। 2001-2011 के दौरान शहरी जनसंख्या का दशकीय विकास 28.75 प्रतिशत रहा जबकि 1991-2001 के दौरान 31.80 प्रतिशत था। 2021 तक राज्य की शहरी आबादी 5.83 करोड़ होने का अनुमान है, जिसका मतलब 2001-2011 के दौरान 1.09 करोड़ के मुकाबले 1.38 करोड़ की वृद्धि होगी।

हालाँकि, उत्तर प्रदेश में 630 नगर पालिकाओं के साथ देश में सबसे बड़ी शहरी प्रणाली है, लेकिन यह शहरीकरण के स्तर में 23 वें स्थान पर है। राज्य में शहरीकरण के स्तर में चिह्नित क्षेत्रीय असंतुलन हैं। जनगणना -2011 के अनुसार, 32.45% शहरी आबादी वाला पश्चिमी क्षेत्र सबसे अधिक शहरीकृत है और 13.40% शहरी आबादी वाला पूर्वी क्षेत्र सबसे कम शहरीकृत है। मध्य और बुंदेलखंड क्षेत्रों की शहरी आबादी क्रमशः 20.06 और 22.74 है।

शहरी जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति से पता चलता है कि बड़े शहरों में विशेष रूप से वर्ग -1 के शहर अपेक्षाकृत तेजी से बढ़ रहे हैं जो इस तथ्य से अलग है कि वर्ग -1 के शहरों में 1951 में 33.71% शहरी आबादी थी जो 2011 में बढ़कर 60% हो गई। इसके अलावा, नागरिकों की संख्या क्लास -1 शहरों में 1991 में 14 से बढ़कर 2001 में 54 और 2011 में 64 हो गया, जबकि महानगरीय शहरों की संख्या 2001 में 6 से बढ़कर 7 हो गई। 2011 में बड़े शहरों में आबादी का प्रतिशत रोजगार के अवसरों के स्थानिक ध्रुवीकरण का संकेत है। छोटे शहर (विशेष रूप से कक्षा -5 और 6 कस्बे) विकास की नकारात्मक दर प्रदर्शित करते हैं जो बड़े (5 लाख से अधिक) शहरों की ओर जनसंख्या के बढ़ते रुझान का संकेत है।

विभिन्न आकार श्रेणियों में शहरी आबादी के वितरण के विश्लेषण से पता चलता है कि राज्य में शहरीकरण की प्रक्रिया बड़े शहरों के लिए अनुकूल रही है। नतीजतन, बड़े शहरों में जनसांख्यिकी वृद्धि के कारण शहरी संरचना अधिक से अधिक भारी होती जा रही है, जो अपने

मजबूत आर्थिक और बुनियादी ढांचे के आधार पर राज्य भर के प्रवासियों को आकर्षित करती है। राज्य में शहरीकरण तेजी से और अधिक समावेशी विकास प्राप्त करने के लिए जरूरी है क्योंकि शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों के ढेर और घनत्व आर्थिक क्षमता को उत्तेजित करते हैं और आजीविका कमाने के अधिक अवसर प्रदान करते हैं। इस प्रकार, शहरीकरण फैलाव वाले ग्रामीण क्षेत्रों में जो संभव है, उसकी तुलना में उद्यमिता और रोजगार के लिए रास्ते बढ़ाता है। शहरीकरण आर्थिक विकास की प्रक्रिया में और अधिक लोगों को शामिल करने में सक्षम बनाता है।